

रॉबर्ट वैनॉय, प्रमुख भविष्यवक्ता, व्याख्यान 29—ईजेकील #5

यहेजकेल 40-48 दूरदर्शी मंदिर

ईजेकील 40-48 कोई स्पष्ट पाठ्य व्याख्या नहीं दी गई

यहेजकेल 40-48 में, आपके पास एक दर्शन का वर्णन है जो यहेजकेल को प्राप्त होता है। यहां जो बात पिछले दर्शनों से अलग है वह यह है कि यहेजकेल को पहले से ही कई दर्शन हुए हैं, लेकिन इससे पहले, यहेजकेल को ऐसे दर्शन मिले थे जिनके बारे में उसे समझाया गया था। हमने अपने अंतिम सत्र में सूखी हड्डियों के दर्शन को देखा, जहां उन्हें सूखी हड्डियों में जान आने और मांस बनने का दर्शन हुआ। लेकिन ईश्वर उस दर्शन के संदर्भ में यहेजकेल 37:14 में कहते हैं, "मैं इस्राएल के लोगों को फिर से खड़ा करूंगा और उनमें नया जीवन फूंकूंगा।" तो आपके पास कम से कम इस बात का संकेत है कि दृष्टि क्या दर्शाने का इरादा रखती है। पुस्तक के आरंभ में, जब वह स्वयं बेबीलोन में था, तब उसे यरूशलेम की दुष्टता और यरूशलेम में होने वाली घटनाओं का एक दर्शन हुआ था, लेकिन तब प्रभु कहते हैं, "मैं दुष्टता के लिए यरूशलेम को दंडित करने जा रहा हूँ। मैं यरूशलेम के इस शहर को नष्ट करने जा रहा हूँ।" लेकिन, जब आप अध्याय 40 पर आते हैं और उसका अनुसरण करते हैं, तो आपके पास यह दृष्टिकोण होता है जो एक इकाई के रूप में दिया जाता है, 40 से 48 तक। हालाँकि, इसके साथ कोई स्पष्टीकरण नहीं दिया गया है कि इसका क्या अर्थ है। निःसंदेह, यह इस खंड की व्याख्या में अंतर का एक कारण है। लेकिन मुझे लगता है कि वास्तव में इसका अर्थ क्या है, इस पर निष्कर्ष पर पहुंचने में देरी करने का यह अपने आप में एक कारण है। जैसे-जैसे हम यहां आगे बढ़ेंगे हम कुछ विकल्पों पर गौर करेंगे।

1. ईजेकील की सामग्री 40-48

ए. दिव्य मन्दिर का वर्णन

लेकिन आपकी रूपरेखा 1 पर ध्यान दें। "अध्याय 40-48" के अंतर्गत है: "अध्याय 40-48 की सामग्री।" उसके अंतर्गत मेरे पास तीन उप-बिंदु हैं। अध्याय 40-43 है: "दूरदर्शी मंदिर का वर्णन।" अध्याय 44-46 है "दूरदर्शी मंदिर की पूजा का वर्णन," और अध्याय 47-48 है: "यहेजकेल के दर्शन

में भूमि की सीमाएँ और विभाजन।" इसलिए मुझे लगता है कि सामग्री उन तीन खंडों में बहुत अच्छी तरह से विभाजित है। यहां बहुत सारी सामग्री है, और जब आप इसे पढ़ते हैं तो इसमें बहुत सारा विवरण होता है।

आइये एक नजर डालते हैं. पहला, "अध्याय 40-43।" इस दूरदर्शी मंदिर की हर छोटी-छोटी विशेषता का वर्णन और मापन किया गया है। आप देख सकते हैं कि यह पहले पाँच छंदों में कैसे शुरू होता है: " हमारे निर्वासन के पच्चीसवें वर्ष में, वर्ष की शुरुआत में, महीने के दसवें दिन, शहर के पतन के बाद चौदहवें वर्ष में " -तो यरूशलेम के गिरने के चौदह वर्ष बाद—“ उसी दिन यहोवा का हाथ मुझ पर हुआ, और उस ने मुझे वहां ले लिया। ” तो दूरदर्शी स्थिति में, ईजेकील को इज़राइल लाया गया है। “ ईश्वर के दर्शन में वह मुझे इज़राइल की भूमि पर ले गया और मुझे एक बहुत ऊँचे पहाड़ पर स्थापित किया, जिसके दक्षिण की ओर कुछ इमारतें थीं जो एक शहर की तरह दिखती थीं। वह मुझे वहां ले गया, और मैं ने पीतल के समान रूपवाला एक मनुष्य देखा; वह हाथ में सनी की डोरी और मापने की छड़ी लिये हुए प्रवेश द्वार पर खड़ा था ।

तो, यहाँ एक आदमी है जिसके पास मापने का उपकरण है। “ उस मनुष्य ने मुझ से कहा, हे मनुष्य के सन्तान, अपनी आंखों से देखो, और अपने कानों से सुनो, और जो कुछ मैं तुझे दिखाऊंगा उस पर ध्यान दे, इसी लिये तू यहां लाया गया है। जो कुछ तुम देखते हो उसे इस्राएल के घराने को बताओ। ”

विस्तृत मंदिर विवरण

इस मंदिर का यह दर्शन इस प्रकार है जिसे इस व्यक्ति द्वारा भाग-दर-भाग मापा जाता है। “ मैंने मंदिर क्षेत्र को पूरी तरह से घेरते हुए एक दीवार देखी। उस आदमी के हाथ में मापने वाली छड़ी की लंबाई छह हाथ थी, जिनमें से प्रत्येक एक हाथ और एक हाथ की चौड़ाई थी। उसने दीवार नापी; यह मापने की एक छड़ मोटी और एक छड़ ऊँची थी।” तो श्लोक पाँच में आपके पास छह हाथ लंबे मापने वाले सरकंडे का संदर्भ है। अब, एक हाथ की लंबाई इस पर निर्भर करती है कि यह लंबा है या छोटा हाथ (यह एक हाथ और एक हाथ की चौड़ाई कहता है, जो लगभग 21 इंच होगा); एक

लंबा हाथ लगभग 21 इंच का होता है, एक छोटा हाथ 18 इंच का होता है। छह हाथ का यह सरकंडा लगभग साढ़े दस फुट लंबा होगा। तो जाहिरा तौर पर यह दीवार लगभग साढ़े दस फीट ऊंची और साढ़े दस फीट चौड़ी थी जिसे यह आदमी मापता है। लेकिन आप देखते हैं, जैसे-जैसे आप आगे बढ़ते हैं, श्लोक छह: " फिर वह पूर्व की ओर मुख वाले द्वार पर गया। वह उसकी सीढ़ियाँ चढ़ गया, और फाटक की देहली नापी; यह एक रॉड गहरा था। श्लोक आठ, "उसने द्वार के ओसारे को मापा," और आपको आयाम देता है। श्लोक दस में, द्वार के कक्ष इस ओर तीन और उस ओर तीन थे। और श्लोक ग्यारह, "उसने फाटक के प्रवेश द्वार की चौड़ाई मापी।" तो, आपके पास बहुत विस्तृत विवरण है।

दो व्याख्याएँ लोगों ने इन विवरणों को पढ़ा है और इसका रेखाचित्र बनाया है, इसलिए आपके पास ईजेकील के मंदिर की संरचना की एक तस्वीर है। लेकिन संदर्भ याद रखें। यह जकेल इस्राएल की भूमि पर आ रहा है। वह एक दूरदर्शी संदर्भ में, एक दूरदर्शी संदर्भ में, मंदिर को देखता है, और वह संरचना की सभी विशेषताओं को अंदर और बाहर मापता है। याद रखें, यह वह इमारत नहीं है जो यह जकेल के समय में इज़राइल में थी; यह एक दर्शन में देखी गई चीज़ है। अब मुझे लगता है कि या तो यह पता चलता है कि भगवान इस मंदिर के इस विस्तृत दर्शन के माध्यम से ईजेकील विचारों को प्रतीकात्मक रूप में दे रहे थे, या इसका मतलब यह हो सकता है कि भविष्य में किसी समय इस आकार की एक इमारत होगी। निःसंदेह, ये दो मुख्य वैकल्पिक व्याख्याएँ हैं: कि यह किसी ऐसी चीज़ का एक दृष्टिकोण है जो किसी दिन शाब्दिक अर्थ में होनी थी या कि यह भविष्य के लिए किसी चीज़ का प्रतीकात्मक चित्र है।

जब आप इस खंड में अध्याय 42, छंद 15-20 पर आते हैं, तो आप पढ़ते हैं [केजेवी], " अब जब वह भीतरी घर को मापने का काम पूरा कर चुका, तो वह मुझे उस फाटक की ओर ले गया जिसका मुख [क्षेत्र] है पूर्व की ओर, और उसे चारों ओर से नापा। और उस ने नापने के बांस से पूर्व की ओर को पांच सौ बांस, और चारों ओर नापने के बांस से नापा। और उस ने उत्तर की ओर के बांस को चारों ओर नापकर पांच सौ बांस नापा। और उस ने नापने के बांस से दक्खिनी ओर को पांच सौ बांस नापा। तब वह पच्छिम की ओर घूमा, और नापने के बांस से पांच सौ बांस नापा। उसने इसे

चारों तरफ से मापा: इसके चारों ओर एक दीवार थी, पाँच सौ बांसलंबी और पाँच सौ चौड़ी, जो पवित्र स्थान और अपवित्र स्थान के बीच अलग हो ।

एलएक्सएक्स पाठ्य संस्करण - क्यूबिट या रीड अब, मैंने किंग जेम्स से पढ़ा है, लेकिन यदि आप एनआईवी को देखते हैं, तो यह 42:15 है, एनआईवी कहता है, " जब उसने मंदिर क्षेत्र के अंदर जो कुछ था उसे मापना समाप्त कर लिया, तो उसने मुझे बाहर ले जाया पूर्व फाटक के पास और चारों ओर का क्षेत्र नापा ; वह पाँच सौ हाथ था ।" "पाँच सौ नरकट" के स्थान पर यह "पाँच सौ हाथ" कहता है। यहां एनआईवी में एक टेक्स्ट नोट है, यह श्लोक 16 है, इसमें लिखा है, "सेप्टुआजिंट, श्लोक 17 देखें।" श्लोक 17 में यह कहा गया है, "उसने उत्तर की ओर से मापा, यह पाँच सौ हाथ था," और पाठ नोट कहता है "हिब्रू: छड़ें, श्लोक 18 और 19 में भी।" तो आपको क्यूबिट या रीड शब्द के साथ एक पाठ्य संबंधी समस्या आती है, और जैसा कि मैंने पहले उल्लेख किया है, एक रीड छह क्यूबिट का होता है। इसलिए इससे बहुत फ़र्क पड़ता है कि आप पाँच सौ हाथ कह रहे हैं या पाँच सौ सरकंडे जो 3,000 हाथ होंगे, या लगभग 4500 फीट।

प्रभु की महिमा की वापसी

फिर यहजकेल 43:3 में : “ जो दर्शन मैं ने देखा, वह उस दर्शन के समान था जो मैंने तब देखा था जब वह नगर को नाश करने आया था, और उन दृश्यों के समान जो मैं ने कबार नदी के तट पर देखा था, और मैं औंधे मुंह गिर पड़ा। यहोवा की महिमा पूर्व की ओर वाले द्वार से होकर मन्दिर में प्रवेश करती थी। तब आत्मा ने मुझे उठाकर भीतरी आंगन में पहुंचाया, और यहोवा का तेज मन्दिर में भर गया। जब वह आदमी मेरे पास खड़ा था, मैंने मंदिर के अंदर से किसी को मुझसे बात करते हुए सुना। उसने कहा: 'मनुष्य के पुत्र, यह मेरे सिंहासन का स्थान और मेरे पैरों के तलवों का स्थान है। यहीं मैं इस्राएलियों के बीच सदैव रहूंगा। इस्राएल का घराना फिर कभी मेरा पवित्र नाम अशुद्ध न करेगा, न तो वे, न उनके राजा, अपनी व्यभिचारिता के द्वारा, और अपने राजाओं की ऊंचे स्थानों पर की निर्जीव मूरतों के द्वारा। जब उन्होंने अपनी दहलीज मेरी दहलीज के पास और अपने दरवाजे के खम्भे मेरे दरवाजे के खम्भों के पास रखे, और मेरे और उनके बीच केवल एक

दीवार थी, तब उन्होंने अपने घृणित कामों से मेरे पवित्र नाम को अशुद्ध कर दिया। इसलिए मैंने अपने क्रोध में उन्हें नष्ट कर दिया। अब वे अपना व्यभिचार और अपने राजाओं की निर्जीव मूर्तों मुझ से दूर करें, और मैं उनके बीच सर्वदा वास करूंगा।''

इसलिए वह दर्शन में जो देखता है वह प्रभु की महिमा की वापसी है। “इस्राएल के परमेश्वर की महिमा।” वह मन्दिर में इस्राएल के परमेश्वर की महिमा की वापसी देखता है। यह पूर्वी द्वार से होकर आती है जिससे यह पहले प्रस्थान करती थी। उसे पहले भी एक दर्शन मिला था, जब उसने यरूशलेम में चल रही सारी दुष्टता को देखा था, अध्याय 10, पद 19 और उसके बाद। आप यहजेकेल 10:18 में पढ़ते हैं, “ तब यहोवा का तेज मन्दिर की डेवढ़ी के ऊपर से हटकर करूबों के ऊपर ठहर गया। जबकि मैं देख रहा था... ” पद 19, “ करूबों ने अपने पंख फैलाए और भूमि पर से उठे, और जब वे चलते थे, तो पहिए भी उनके साथ चलते थे। वे यहोवा के भवन के पूर्वी फाटक के द्वार पर रुके, और इस्राएल के परमेश्वर का तेज उनके ऊपर था । यदि आप 11:23 पर जाएँ, तो वह कहता है, “ यहोवा का तेज नगर के भीतर से निकलकर उसके पूर्व के पर्वत के ऊपर रुक गया। आत्मा ने मुझे उठाया और परमेश्वर की आत्मा द्वारा दिए गए दर्शन के अनुसार बेबीलोनिया में बंधुओं के पास ले आया । इससे पहले उसने यरूशलेम से निकलते हुए प्रभु की महिमा का एक दर्शन देखा था। अब वह प्रभु की महिमा के यरूशलेम लौटने का दर्शन देखता है, और परमेश्वर कहता है कि "मैं उनके बीच सदैव वास करूंगा।"

नए मंदिर का उद्देश्य यहजेकेल 43:10-12 कुछ कहता है, हालांकि यह गूढ़ है, और मैं व्याख्या की समस्या का समाधान वहां नहीं करूंगा, लेकिन यह उस मंदिर के उद्देश्य के बारे में कुछ कहता है जिसे उसने देखा था। देखिये, अध्याय 43 के श्लोक 10-12 में कहा गया है, “ मनुष्य के सन्तान, इस्राएल के लोगों को मन्दिर का वर्णन करो, कि वे अपने पापों पर लज्जित हों। उन्हें योजना पर विचार करने दें, और यदि वे अपने किए गए सभी कार्यों से शर्मिंदा हैं, तो उन्हें मंदिर का डिज़ाइन बताएं - इसकी व्यवस्था, इसके निकास और प्रवेश द्वार - इसका पूरा डिज़ाइन और इसके सभी नियम और कानून। इन्हें उनके सामने लिखो ताकि वे इसके डिज़ाइन के प्रति वफादार रहें और इसके सभी नियमों का पालन करें। मंदिर का नियम यह है: पर्वत के शीर्ष पर आसपास का सारा

क्षेत्र परम पवित्र होगा। मंदिर का नियम ऐसा ही है ."

ऐसा लगता है कि मंदिर भगवान की पवित्रता की अभिव्यक्ति है, और लोगों को योजना को देखना है, और इस योजना में भगवान की पवित्रता की कुछ अवधारणा या विचार है, और उन्हें पैटर्न को मापने के लिए प्रेरित किया जाता है . इस प्रकार राजा जेम्स श्लोक 10 के अंतिम वाक्यांश में वाक्यांश का अनुवाद करते हैं, "पैटर्न को मापें।" एनआईवी का कहना है, "उन्हें योजना पर विचार करने दें।" ऐसा लगता है, कि किसी तरह, लोगों को पवित्रता का मार्ग सीखना है ताकि वे इस दूरदर्शी मंदिर की संरचना और उपयोग के विवरण के बारे में जागरूकता से, जैसा कि श्लोक 10 कहता है, अपने अधर्मों पर शर्मिंदा हो सकें।

अब, यहजेकेल 43:13 और निम्नलिखित वेदी की बात करते हैं। इसमें इसके माप का वर्णन है। मुझे नहीं लगता कि हमें इसके विवरण पर गौर करने की जरूरत है, यह शेष अध्याय में दिया गया है। आगे बढ़ने से पहले प्रश्न?

प्रश्न: क्या कभी कोई ऐसा मंदिर था जो यहजेकेल द्वारा वर्णित मंदिर जैसा दिखता था?

उत्तर: कभी भी कोई मंदिर अस्तित्व में नहीं था, चाहे मूल मंदिर हो या निर्वासन से लौटने के समय पुनर्निर्माण या यहां तक कि हेरोदेस के अतिरिक्त के साथ, इसने कभी भी इस विशेष योजना का पालन नहीं किया। दूसरी ओर, कुछ तत्व हैं, यदि आप अध्याय 47 पर जाएं, तो मुझे लगता है कि यह सब एक टुकड़ा है, आपके पास यह नदी है जो वेदी से नीचे मृत सागर की ओर बह रही है जो आगे बढ़ने के साथ और गहरी होती जाती है। आप उसे कैसे करते हैं? तो कुछ ऐसी विशेषताएं हैं जो निर्माण की संभावना से परे लगती हैं।

यहजेकेल 43:13-27 वेदी का वर्णन करता है, और यह हमें अध्याय 43 के अंत तक ले जाता है, जो दूरदर्शी मंदिर और उसके विभिन्न हिस्सों का वर्णन है। यदि आप किसी भी मानक टिप्पणी में देखते हैं, तो आपको चित्र मिलेंगे, मान लीजिए कि मंदिर के विवरण से निर्मित चित्र, और फिर आंगन और आंतरिक आंगन, बाहरी आंगन, इसके चारों ओर की दीवार के साथ बड़े मंदिर क्षेत्र के चित्र , स्वयं पवित्रस्थान, और पिछला भाग। वे इस तरह के रेखाचित्र लेकर आते हैं। तो इसकी कल्पना की जा सकती है.

बी। दूरदर्शी मंदिर में पूजा का विवरण - ईजेकील 44-46 आइए बी पर चलते हैं, "दूरदर्शी मंदिर में पूजा का विवरण।" फिर, मैं इसे किसी भी विस्तृत विवरण में नहीं देखना चाहता, लेकिन बस एक विचार प्राप्त करना चाहता हूँ। यहजेकेल 44:1-31 में, आपके पास लेवियों और याजकों और राजकुमार के बारे में टिप्पणियाँ हैं। पहले चार छंदों पर ध्यान दें: " तब वह मनुष्य मुझे पवित्रस्थान के बाहरी फाटक के पास, जो पूर्व की ओर था, लौटा ले आया, और वह बन्द कर दिया गया। यहोवा ने मुझ से कहा, 'यह द्वार बन्द रखा जाए। इसे खोला नहीं जाना चाहिए; कोई भी इसके माध्यम से प्रवेश नहीं कर सकता. वह बन्द रहे, क्योंकि इस्राएल का परमेश्वर यहोवा उसमें से होकर प्रवेश करता है ।" यह पूर्वी द्वार के विषय में कहता है। " राजकुमार ही एकमात्र ऐसा व्यक्ति है जो प्रभु की उपस्थिति में भोजन करने के लिए द्वार के अंदर बैठ सकता है। वह प्रवेश द्वार के ओसारे से प्रवेश करे और उसी मार्ग से बाहर निकले।' तब वह पुरूष मुझे उत्तरी फाटक से होकर मन्दिर के साम्हने ले आया। मैं ने दृष्टि करके देखा, कि यहोवा का तेज यहोवा के भवन में भर रहा है, और मैं मुंह के बल गिर पड़ा ।

इस राजकुमार के आने तक पूर्वी द्वार बंद रहेगा

देखिए, वे पहले चार श्लोक इस राजकुमार के आने तक पूर्वी द्वार के बंद होने के बारे में बात करते हैं। और इस खंड के माध्यम से राजकुमार के अन्य संदर्भ भी हैं। सवाल यह है, "यह कौन है?" आपको शुरू में आश्चर्य हो सकता है, "क्या वह मसीहा है? क्या वह मसीह है?" लेकिन, आगे पढ़ने पर साफ लगता है कि राजकुमार मसीहा नहीं हो सकता. यदि आप 46:2 को देखते हैं, तो आप पढ़ते हैं, " राजकुमार को प्रवेश द्वार के बरामदे के माध्यम से बाहर से प्रवेश करना चाहिए और द्वारस्तंभ के पास खड़ा होना चाहिए।" याजकों को उसका होमबलि और मेलबलि चढ़ाना चाहिए। " इस राजकुमार के पास स्पष्ट रूप से पुरोहिती अधिकार नहीं हैं; "याजक उसके होमबलि और मेलबलि चढ़ाएंगे"—यह 46:2 है। 45:22 में कहा गया है, "उस दिन, राजकुमार को अपने और देश के सभी लोगों के लिए पापबलि के लिए एक बैल प्रदान करना होगा।" उसे पापबलि चढ़ाने की

ज़रूरत है। प्रभु यहोवा यों कहता है, यदि प्रधान अपने निज भाग में से अपने किसी पुत्र को दान दे, तो वह उसके वंश का भी हो जाएगा; यह उत्तराधिकार के आधार पर उनकी संपत्ति होगी।" इसलिए राजकुमार के बेटे हैं।

प्रिंस ऑप्शंस की पहचान अब, चार्ल्स फीनबर्ग, अपनी टिप्पणी में, मंदिर का उपयोग शाब्दिक मंदिर के रूप में करते हैं जिसे उन्होंने बनाया था। उसे लगता है कि राजकुमार डेविड का वंशज है जो सरकारी तौर पर मसीहा का प्रतिनिधित्व करेगा; मसीहा नहीं, बल्कि मसीहा की सरकार का प्रतिनिधि। कुछ अन्य टिप्पणीकारों का सुझाव है कि राजकुमार स्वयं डेविड है। मुझे लगता है कि राजकुमार की पहचान के बारे में किसी ठोस नतीजे पर पहुंचना बहुत मुश्किल है। ऐसा प्रतीत होता है कि वह कुछ कार्यों में किसी न किसी प्रकार से प्रभु के उप-शासनकर्ता के रूप में कार्य करता है; उसके कुछ महत्वपूर्ण कार्य हैं, लेकिन उसे निश्चित रूप से मसीहा से अलग किया जाना चाहिए।

लेवियों की भूमिका

आइए यहजेकेल अध्याय 44 की ओर आगे बढ़ें। आयत 5-9 में कहा गया है कि किसी भी विदेशी या परदेशी को पवित्रस्थान में छोटा-मोटा काम नहीं करना चाहिए। पद 10-14: लेवियों को भवन के रखवाले के रूप में कार्य करना है। आयत 10 और उसके बाद देखें, " जो लेवीय उस समय मुझ से दूर हो गए थे जब इस्राएल भटक गया था, और जो मुझ से दूर होकर अपनी मूरतों के पीछे हो गए थे, उन्हें अपने पाप का फल भोगना पड़ेगा। वे मेरे पवित्रस्थान की सेवा करें, और मन्दिर के द्वारोंकी देखरेख करें, और उस में सेवा करें; वे लोगों के लिये होमबलि और बलिदान बलि करें, और लोगों के साम्हने खड़े होकर उनकी सेवा करें। परन्तु क्योंकि उन्होंने अपनी मूरतों के साम्हने उनकी सेवा की, और इस्राएल के घराने को पाप में फंसाया, इस कारण मैं ने हाथ उठाकर शपथ खाई है, कि उन्हें अपने पाप का फल भुगतना पड़ेगा, परम प्रधान यहोवा की यही वाणी है। वे याजक के रूप में मेरी सेवा करने, या मेरी किसी पवित्र वस्तु, या मेरी परमपवित्र भेंट के निकट न आने पाएं; उन्हें अपने घृणित आचरण की शर्मिंदगी उठानी होगी। फिर भी मैं उन्हें मन्दिर के कर्तव्यों और उसमें होने वाले सभी कार्यों का प्रभारी बनाऊंगा। इसलिए लेवी, जो इस्राएल में

अधिकांश पापपूर्ण पतन के लिए जिम्मेदार थे, यहाँ मंदिर के प्रभारी रखवाले हैं। वे छोटे-मोटे काम करते हैं और उन्हें उच्च पौरोहित्य कार्य से बाहर रखा जाता है, जो श्लोक 15-17 में सादोक की पंक्ति के पुजारियों को दिया गया है। पद 15, " परन्तु जो याजक लेवीय और सादोक के वंश के हैं, और जब इस्राएली मेरे पास से भटक गए थे, तब उन्होंने मेरे पवित्रस्थान का काम सच्चाई से किया, वे मेरे साम्हने सेवा करने को समीप आएँ...। " सादोक अबशालोम के विद्रोह के दौरान दाऊद का वफादार रहा था, और उसने सुलैमान को राजा नियुक्त किया था, और सादोक के वंश के वंशज इस मंदिर में पुजारी होंगे।

अध्याय 44 के छंद 28-31 में पुजारियों के भरण-पोषण के लिए प्रावधान है, उन्हें प्रसाद आदि के माध्यम से कैसे प्रदान किया जाएगा। अध्याय 45-46 में, आपके पास चढ़ावे, बलिदान और मनाए जाने वाले पवित्र दिनों का वर्णन है। मैं उसके बारे में विस्तार से नहीं बताऊंगा, लेकिन आपके पास उसका विस्तृत विवरण है।

सी। ईजेकील के दृष्टिकोण में भूमि की सीमाएँ और विभाजन - ईजेकील 47-48

आइए सी., अध्याय 47-48 पर चलते हैं: "यहेजकेल के दर्शन में भूमि की सीमाएँ और विभाजन।" आइए अध्याय 47, पहले बारह छंदों से शुरू करें क्योंकि यह मंदिर नदी है। " वह आदमी मुझे मंदिर के प्रवेश द्वार पर वापस ले आया, और मैंने देखा कि मंदिर की दहलीज के नीचे से पूर्व की ओर (मंदिर का मुख पूर्व की ओर है) पानी निकल रहा है। पानी मन्दिर के दक्षिणी भाग के नीचे से, वेदी के दक्षिण की ओर बह रहा था। फिर वह मुझे उत्तरी फाटक से बाहर ले आया, और मुझे बाहर से घुमाकर पूर्व की ओर वाले बाहरी फाटक तक ले गया, और जल दक्षिण की ओर से बह रहा था। जब वह आदमी हाथ में नापने की डोरी लेकर पूर्व की ओर गया, तो उसने एक हजार हाथ नाप लिया और फिर मुझे टखनों तक गहरे पानी में से ले गया। उसने और हजार हाथ नापे और मुझे घुटनों तक गहरे पानी में से निकाला। उसने और हजार नापे और मुझे कमर तक पानी में से निकाला। उसने और हजार नापे, लेकिन अब यह एक नदी थी जिसे मैं पार नहीं कर सकता था क्योंकि पानी बढ़ गया था और तैरने के लिए काफी गहरा था - एक ऐसी नदी जिसे कोई भी पार नहीं कर सकता था। उस ने मुझ से पूछा, हे मनुष्य के सन्तान, क्या तू इसे देखता है? फिर वह मुझे वापस

नदी के किनारे ले गया। जब मैं वहाँ पहुंचा तो मैंने नदी के दोनों किनारों पर बड़ी संख्या में पेड़ देखे। उसने मुझसे कहा, 'यह पानी पूर्वी क्षेत्र की ओर बहता है और अराबा में चला जाता है, जहाँ यह समुद्र में मिल जाता है। जब यह समुद्र में गिरता है तो वहाँ का पानी ताज़ा हो जाता है। जहाँ भी नदी बहती है वहाँ जीवित प्राणियों के झुंड रहेंगे। वहाँ मछलियाँ बड़ी संख्या में होंगी क्योंकि यह पानी वहाँ बहता है और खारे पानी को ताज़ा बनाता है; इसलिए जहाँ नदी बहती है वहाँ सभी चीजें जीवित रहेंगी। मछुआरे किनारे पर खड़े होंगे; एनगेदी से एन एलैम तक जाल फैलाने के स्थान होंगे। मछलियाँ कई प्रकार की होंगी--जैसे महान समुद्र की मछली। परन्तु दलदल और दलदल नये न होंगे; उन्हें नमक के लिए छोड़ दिया जाएगा. नदी के दोनों किनारों पर सभी प्रकार के फलों के पेड़ उगेंगे। उनके पत्ते न मुरझाएँगे, न उनके फल नष्ट होंगे। हर महीने वे सहन करेंगे क्योंकि पवित्रस्थान का पानी उनके पास बहता है। उनके फल भोजन के काम आएंगे और उनकी पत्तियाँ उपचार के काम आएंगी।"

टेम्पल नदी

तो आपके पास इस नदी की ये दिलचस्प तस्वीर है. पानी मंदिर की वेदी, दूरदर्शी मंदिर से शुरू होता है, और वे मंदिर से जाते हैं। वहाँ यह आदमी गहराई माप रहा है, और जैसे ही वह पूर्व की ओर जाता है, एक हजार हाथ (लगभग पंद्रह सौ फीट), पानी उसके टखने तक आ जाता है। और फिर, पंद्रह सौ फीट नीचे की ओर, पानी उसके घुटनों तक है। और पंद्रह सौ फीट, और यह उसके कूल्हों तक है। और पंद्रह सौ फीट, यह उसके सिर के ऊपर है; उसे इसमें तैरना है. अब दिलचस्प बात यह है कि नदी का विकास समझ से परे है। इसकी शुरुआत मंदिर से निकलने वाली इस छोटी सी धारा के रूप में होती है। लेकिन हर चौथाई मील पर यह और भी गहरी होती जाती है जब तक कि यह एक बड़ी, गहरी नदी न बन जाए। यह एक अजीब घटना है. सहायक नदियों के आने का कोई सुझाव नहीं है; बात बस इतनी है कि जैसे-जैसे यह आगे बढ़ता है, आवाज़ बढ़ती जाती है। तो कुछ अस्पष्ट तरीके से, यह पानी मंदिर की वेदी से जितना दूर जाता है इसकी गहराई बढ़ती जाती है। फिर जब आप थोड़ा आगे पढ़ते हैं, श्लोक 9-12, तो यह कहता है कि नदी के किनारों पर पेड़ हैं, और पानी में उपचार करने वाला गुण है।

यहेजकेल की व्याख्या कैसे करें का प्रश्न उठाना 40-48

बेशक आप पूछ सकते हैं, इस सबका मतलब क्या है? हम इसे कैसे समझें? क्या इसे शाब्दिक रूप से या प्रतीकात्मक रूप से लिया जाना चाहिए? क्या यह भौतिक परिवर्तन का वर्णन है? ऐसा क्या होने वाला है जो इस तरह की घटना को घटित करने में सक्षम बनाएगा? नदी की वृद्धि और गहराई, पेड़ों और पत्तियों की उपचारात्मक गुणवत्ता के बारे में इतनी सारी जानकारी क्यों? मुझे लगता है कि जब आप इसे पढ़ते हैं, तो आप मदद नहीं कर सकते, लेकिन कम से कम समानता के बारे में सोचते हैं, हालांकि यह प्रकाशितवाक्य 22 के समान नहीं है, जहां जॉन को जीवन के जल की एक नदी दिखाई गई है, जो क्रिस्टल की तरह स्पष्ट है, जो सिंहासन से बाहर निकल रही है। भगवान का और भूमि का. निश्चित रूप से कल्पना समान है. तो हम यहेजकेल में पूछ सकते हैं, जैसा कि प्रकाशितवाक्य में है, क्या ऐसा कुछ है जो इस नदी के प्रवाह को प्रतीकात्मक रूप से दर्शाया गया है? ईजेकील में ध्यान दें, यह पूरी जीत नहीं है जिसे नदी हासिल करती है। दूसरे शब्दों में, यहाँ चित्र वैसा ही है जैसा आप भविष्यवक्ताओं में कहीं और पाते हैं जहाँ यह कहा गया है कि धार्मिकता पृथ्वी को वैसे ही ढक लेगी जैसे पानी समुद्र को ढक लेता है। यह सार्वभौमिक नहीं है क्योंकि यह कहता है कि दलदल बना हुआ है और दलदल पूरी तरह से ताज़ा नहीं होगा। वह श्लोक 11 है। इसलिए हर चीज़ ठीक नहीं होने वाली या ताज़ा नहीं होने वाली है।

अब, जहां तक व्याख्या की बात है, तो जब तक हम इसके अंत तक नहीं पहुंच जाते और कुछ निष्कर्षों पर पहुंचने का प्रयास नहीं करते, तब तक इसे रोक कर रखें। लेकिन इसके बाद अध्याय 47 में, आपके पास विभिन्न जनजातियों और समग्र रूप से भूमि की सीमाओं का वर्णन है। और जहां तक सीमाओं का सवाल है यह एक उल्लेखनीय वर्णन है। यह अलेक्जेंडर की टिप्पणी से लिया गया है. इन सीमाओं के अनुसार यह लगभग ऐसा ही दिखेगा। आपने एक छोर पर विस्तारित सीमा के बारे में एक बात नोटिस की है। यह दमिश्क से काफी ऊपर जा रहा है. मुझे यकीन है कि वर्तमान राजनीतिक माहौल में इस तरह का दृष्टिकोण वहां के विवादों को सुलझाने में मदद नहीं कर रहा है। इसलिए यह मूल कनान की तुलना में सीमाओं का बिल्कुल अलग वर्णन है। फिर यह राजकुमार, याजकों और लेवियों के लिये प्रबन्धों का भी वर्णन करता है। तुम्हें हाकिम के क्षेत्र,

याजकों के भाग, लेवियों के भाग, और पवित्रस्थान के लिये सीमाएँ मिलें। लेकिन फिर, जॉर्डन से भूमध्य सागर की ओर बढ़ते हुए, सीमाएँ सीधे कट जाती हैं।

तो यह अध्याय 48 तक चलता है। तो इन 9 अध्यायों, 40-48 में, आपके पास एक तस्वीर है, जो मंदिर की तस्वीर से शुरू होती है। यह सब दूरदर्शी है। फिर मन्दिर में पूजा करना, और जिस प्रकार के बलिदान लाए जाते हैं, राजकुमार के लिए एक द्वार आरक्षित किया जाता है, जो उसके आने तक बन्द रखा जाता है, और फिर यह बड़ी नदी जो पवित्रस्थान से शुरू होती है और निकल जाती है। अंत में, जनजातीय आवंटन द्वारा विभाजित भूमि का दृष्टिकोण। तो यह हमें व्याख्या के प्रश्न पर लाता है: यह सब क्या है?

रिबका गिबन्स
द्वारा लिखित रफ का संपादन टेड हिल्डेब्रांट द्वारा किया गया,
अंतिम संपादन डॉ. पेरी फिलिप्स द्वारा किया गया
डॉ. पेरी फिलिप्स द्वारा पुनः सुनाया गया